

पद १४८

(राग: कानडा – ताल: त्रिवट)

जानि घन गरजे बिरला कोई ॥ध्रु.॥ खनन खनन घनन घनन ।
उबताक कननन उडत निशान ॥१॥ झनन झनन मानिक को ।

कहेना सननन उडे जैसे बान ॥२॥